जुन्नैद के लिये

कल यहाँ ईद थी
लेकिन इस ईद में खुशी नहीं मातम था
कल 15 साल के एक बच्चे जुन्नैद की
ट्रेन में कुछ लोगों ने हत्या कर दी

यह हत्या किसी आतंकवादी ने
उग्रवादी ने या नक्सली ने नहीं की
यह तो तथाकथित धर्मवादियो ने की
और गौ मांस के नाम पर
जुनेद के मांस को
उसके शरीर से उधेड़ कर रख दिया

मरने वाला चोर था, डाकू था
चरमपंथी था, हत्यारा था ,इसलिए मरा?
नहीं!!! वह इनमें से कोई नहीं था
उसका कसूर बस एक ही था
कि वह जुन्नैद था

इधर जुनैद मरा
और उधर नफरत का एक और अंकुर
कुछ लोगों के दिल में फिर से जा बसा
जल्द ही वो भी कोई सुरेश या रमेश ढूंढ लेंगे
और सिलसिला चलता रहेगा
क्या फर्क पड़ता है?
आदमी मरता रहा है
आदमी मरता रहेगा |

- ऋषि आचार्य

पेशवर और बेरोजगार

मैंने उनसे पूछा
तुम्हारा पेशा क्या है?
अपनी सफ़ेद कॉलर ऊँची करके
वो बोले
बहुत से पेशे है , मसलन …

हम दीवार बनाते है - जाति की |
हम खाइयाँ भी खोद लेते है - अमीर और ग़रीब की |

ज़हर बनाना हमारा ख़ानदानी पेशा रहा है
ऐसा की जो दिल की रग में सीधा घुसे
फिर बरसों तक असर दिखाता है
एक बार में नहीं धीरे धीरे तुम्हे मारता है|
और सर्कस भी सजा लेते है कभी कभी
इंसानियत को मौत के कुँए में डालना
हमारे बायें हाथ का खेल है|

हममें से कुछ लोग शक्कर सी मीठी
जलेबियाँ भी बना लेते है
जिसमे अंधश्रद्धा की चाशनी जम कर भरी होती है
रंग हरा, सफ़ेद , केसरियाँ जो चाहे उस तरह की
इनके कड़ाही से निकलते ही
मक्खियों के झुंड के झुंड चिपकने आ जाते है|

नारों और सब्जबागों के हम पेशेवर माली है
जन्नत के बगीचे दिखाकर
झोपड़े का दर्द एक पल में
भुला सकते है|

कहने तो तुम हमारा पेशा
हर उस चीज़ से जोड़ सकते हो

जो इंसान के घुटने तोड़ सकती है
उसकी हस्ती और अरमान मरोड़ सकती है|
इस धरती से नहीं सातवे आसमान से उसे जोड़ सकती है|

फिर उन्होंने मुझसे पूछा की
तुम्हारा क्या पेशा है?
मैंने कहा - मैं बेरोजगार हूँ ,
और वही रहना चाहता हूँ|

- ऋषि आचार्य

युवा होने का मतलब

वह युवा कहो किस मतलब का
 जिस की धमनी में उछाल नहीं.
वह युवा कहो किस मतलब का
जो मां का सच्चा लाल नहीं||

वह युवा कहो किस मतलब का
जिसकी छाती में ज्वार न हो |
कटते मरते लूटते पिटते
मनुजन हेतु चित्कार ना हो||

वह युवा कहो किस मतलब का
जिस का सुख केवल ललना हो|
हाथों में सोम सरोवर हो
नोटों का बिस्तर पलना हो||

वो युवा कहो किस मतलब का
जिसका उद्देश्य ही काला हो
जो छुपकर आंचल में बैठे
 जब नाच असुर मतवाला हो

वह युवा कहो किस मतलब का
जिसमें कोई भूचाल ना हो|
शत्रु को सन्मुख देख जान
असिधार रुधिर से लाल ना हो||

वह युवा कहो किस मतलब का
जो मतलब के तलवे चाटे|
जो लीक छोड़ चल ना पाए
जो बैठ बैठ बस दिन काटे||

वह युवा कहो किस मतलब का
वाणी में जिसके आग ना हो
जब बोले तो दुनिया कांपे
मन में, मुख में दो भाग न हो||

वह युवा कहो किस मतलब का
आंखों में जब अंगार ना हो
धरती को अंबर तक खिंचे
अंबर में हाहाकार ना हो

वह युवा कहो किस मतलब का
जिस का मतलब सुख वैभव हो |
और कदम उठाने के पहले
जिसको गिर जाने का भय हो||

वह युवा नहीं जिसके सपने
केवल पत्नी और बच्चे हो|
जब राष्ट्र बलि को मांग रहा
तब गर्दन जिसके कच्चे हो||

वह कैसे देश बनाएगा
वह क्या परिवर्तन लाएगा
जिसका जीवन खुद चींटी हो
वो कैसे शीला हिलायेगा||

तो जागो छोड़ो धरती को
छूना हो यदि तुमको अंबर
तुम युवा रक्त जैसे उबलो
जाओ पसीने से तर तर||

सिर्फ देखोगे की दासी बन
समृद्धि द्वार पड़े होगी|
इतिहास बनोगे धरती के
किस्मत मुस्काए खड़ी होगी||

- ऋषि आचार्य